श्री सुदर्शणाष्टकं

प्रतिभटश्रेणि भीषण वरगुण स्तोम भूषण
जनि भयस्तानतारण जगदवस्थानकारण ।
निखिलदुष्कर्म कर्शन निगम सद्दर्म दर्शन
जय जय श्रीसुदर्शन - जय जय श्रीसुदर्शन ॥ 1

शुभजगद्रूपमंडन सुरगण त्रासखंडन
शतमख ब्रह्मवंदित शतपथ ब्रह्मनंदित ।
प्रथित विद्वत्सपक्षित भजदहिर्भुध्न्य लक्षित
जय जय श्रीसुदर्शन - जय जय श्रीसुदर्शन ॥ 2

स्फुट तटिज्जाल पिंजर पृथुतर ज्वालपंजर
परिगत प्रत्न विग्रह पटुतर प्रज्ञ दुर्गृह ।
प्रहरण ग्राम मंडित परिजन त्राण पंडित
जय जय श्रीसुदर्शन - जय जय श्रीसुदर्शन ॥ 3

निजपद प्रीत सद्गण निरुपधि स्फीत षड्गुण
निगम निर्व्यूढ वैभव निजपर व्यूह वैभव ।
हरिहय द्वेषिदारुण हर पुरप्लोष कारण
जय जय श्रीसुदर्शन - जय जय श्रीसुदर्शन ॥ 4

दनुज विस्तार कर्तन जनि तमिस्रा विकर्तन
दनुज विद्या निकर्तन भजदविद्या निवर्तन ।

© 2022 Vedam Nadam

अमरदृष्टस्व विक्रम समर जुष्टभ्रमिकम
जय जय श्री सुदर्शन - जय जय श्री सुदर्शन ॥ 5

प्रतिमुखालीढ बंधुर पृथु महाहेति दंतुर
विकट माया बहिष्कृत विविध मालापरिष्कृत ।
स्थिर महायंत्र तंत्रित दृढदया तंत्र यंत्रित
जय जय श्रीसुदर्शन - जय जय श्रीसुदर्शन ॥ 6

महित संपत्सदक्षर - विहितसंपत्षडक्षर
षडरचक्र प्रतिष्ठित सकलतत्व प्रतिष्ठित ।
विविधसंकल्पकल्पक विभुधसंकल्पकल्पक
जय जय श्रीसुदर्शन - जय जय श्रीसुदर्शन ॥ 7

भुवननेत्र त्रयीमय सवन तेजस्त्रयीमय
निरविधिस्वादु चिन्मय निखिलशक्ते जगन्मय ।
अमितविश्वक्रियामय शमित विश्वग्भयामय
जय जय श्रीसुदर्शन - जय जय श्रीसुदर्शन ॥ 8

दिचतुष्कमिदं प्रभूतसारं
पठतां वेंकटनायाक प्रणीतं ।
विषमेऽपि मनोरथः प्रधावन्
नविहन्येत रथांगधुर्यगुप्तः ॥ 9

॥ इति श्री वेदांतचार्यस्य कृतिषु सुदर्शणाष्टकं संपूर्णम् ॥

© 2022 Vedam Nadam